"महिलाएं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान तभी कर पाएंगी जब वे सुरक्षित होंगी ", लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 2014: लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन ने आज राष्ट्रमंडल देशों की महिला सांसदों की विचारगोष्ठी 'महिलाओं की भारत के विकास में केंद्रीय भूमिका है' का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर श्रीमती महाजन ने कहा कि किसी भी सभ्यता के उत्कृष्ट होने का पता इससे लगता है कि वह सभ्यता महिलाओं को कितना सम्मान देती है। जब हम महिलाओं के सशक्तीकरण की बात करते हैं तो उसका अर्थ होता है महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना एवं उन्हें अपने तरीके से जीवन जीने का हक देना। सशक्तीकरण का अर्थ उनके राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानव जीवन के अन्य आयामों के साथ-साथ उन्हें शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक रूप से स्वतंत्र बनाना है। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तीकरण किसी भी समाज के आधुनिकीकरण का रास्ता खोलती है।

यह विचार व्यक्त करते हुए कि महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे कारगर तरीका उन्हें शिक्षित करना है श्रीमती महाजन ने कहा कि जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक परिवार को शिक्षित करते हैं। श्रीमती महाजन ने कहा कि हमने शिक्षा का विस्तार करने के लिए गम्भीर प्रयास किए हैं और प्राथमिक शिक्षा जैसे कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया है।

लोक सभा अध्यक्ष ने आगे कहा कि महिलाओं के सशक्तीकरण में मीडिया की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मीडिया में महिलाओं से संबंधित सरोकारों को प्राथमिकता के आधार पर दिखाए जाने की आवश्यकता है। सिनेमा, विज्ञापन एवं टी.वी. पर महिलाओं की जो छवि प्रस्तुत की जाती है वह चिंताजनक है। साथ ही महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेने की आवश्यकता है।

इस बात पर जोर देते हुए कि महिलाएं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान तभी कर पाएंगी जब वे सुरक्षित होंगी, श्रीमती महाजन ने कहा कि महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों को रोकने के लिए जीपीएस टेक्नोलॉजी युक्त परिवहन व्यवस्था, पुलिस स्टेशनों का आपस में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जोड़ा जाना, अपराधियों के आंकड़ों का केन्द्रीय संग्रहण एवं उनकी

व्याख्या इत्यादि महत्वपूर्ण कदम हैं। लोक सभा अध्यक्ष ने यह भी कहा कि महिलाओं की संवर्धित भागीदारी महिला सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। महिलाओं की हिस्सेदारी को हमें विधायिका में स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय तीनों स्तरों पर बढ़ाना है।

विचारगोष्ठी में संसद सदस्य, प्रत्येक राज्य विधानमंडल से दो प्रतिनिधि व कई संसदीय समितियों के सदस्य भाग ले रहे हैं।